ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

# ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे    निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 27    अंकः 58    बुलेटिन अवधिः 25 – 29 जुलाई, 2018    दिनः मंगलवार    दिनाँकः 24 जुलाई, 2018

**मौसम पूर्वानुमानः**

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

| पूर्वानुमानित मौसम तत्व | मौसम पूर्वानुमान–नैनीताल | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | 25/07/2018 | 26/07/2018 | 27/07/2018 | 28/07/2018 | 29/07/2018 |
| वर्षा (मिमी0) | 25 | 45 | 40 | 30 | 40 |
| अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.) | 21 | 20 | 20 | 20 | 21 |
| न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.) | 14 | 13 | 13 | 12 | 13 |
| बादल आच्छादन | घने बादल | घने बादल | घने बादल | घने बादल | घने बादल |
| अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत) | 90 | 95 | 95 | 90 | 85 |
| न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत) | 45 | 50 | 55 | 50 | 45 |
| वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा) | 006 | 006 | 008 | 008 | 008 |
| वायु की दिशा | पूर्व–उत्तर–पूर्व | दक्षिण–पूर्व | पूर्व–दक्षिण–पूर्व | पूर्व–उत्तर–पूर्व | पूर्व |

**आगामी 25 से 29 जुलाई को मध्यम वर्षा होने के साथ आसमान में घने बादल छाये रहने की सम्भावना है।**

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों ( 17 – 23 जुलाई 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान में मध्यम से घने बादल छाये रहे तथा अधिकतम तापमान 18.7 से 22.4 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 15.3 से 15.8 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

# कृषि मौसम परामर्श

**फसल प्रबन्धः**

❖ धान की फसल की रोपाई इस माह समाप्त कर लें।
❖ पौध रोपण के समय मुख्य खेत की तैयारी करे तथा अंतिम जुताई के समय तथा लेव लगाने से पहले 75 किग्रा नत्रजन, 60 किग्रा फॉसफोरस तथा 40 किग्रा पोटाश के साथ ही 25 किग्रा जिंक सल्फेट प्रति हैक्टेयर के हिसाब से प्रयोग करे।
❖ एक स्थान पर 2 या 3 पौधे ही लगाये।
❖ पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20–25 सेमी तथा पौध से पौध की दूरी 10 सेमी रखे।
❖ रोपित धान में खरपतवार के नियत्रंण हेतु प्रेटीलाक्लोर 50 ईसी रोपाई के तीन दिन के अंदर 1.5–2.0 लीटर मात्रा को 500 लीटर पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करे।
❖ साइहैलोफॉप ब्यूटाइल 10 ईसी की 1 लीटर मात्रा को 500 लीटर पानी मे घोल बनाकर रोपाई के 20–25 दिन बाद प्रयोग करें।
❖ रोपित धान में खरपतवार के नियत्रंण हेतु ब्यूटाक्लोर (50 ईसी) (व्यापारिक नाम–मचेटी बेलाक्लोर, कैपक्लोर, पैराक्लोर) की 3 लीटर मात्रा को 750 ली0 पानी में घोल बनाकर रोपाई के 3 दिन के अंदर प्रयोग करे। *या*
❖ बिस्पायरिबैग सोडियम (10 ईसी) (नॉम्नीगोल्ड) 200 से 250 मिली0 मात्रा को रोपाई के 20–25 दिन के बाद 500 ली0 पानी का घोल बनाकर प्रयोग करने से हर प्रकार के खरपतवारो का नियत्रंण हो जाता हैं। *या* मैट सल्फयूरॉन मिथाइल + क्लोरो सल्फयूरॉन इथाइल की 20 ग्रा0 मात्रा को 500 ली0 पानी में घोल बनाकर रोपाई के 20–25 बाद या खरपतवार के 3–4 पत्ती आने की अवस्था पर प्रयोग करने पर चौड़ी पत्ती एवं मौथा वर्गीय खरपतवारो का नियत्रंण हो जाता है।
❖ गन्ने मे खरपतवार निकाले तथा सिंचाई व जल निकास की उचित व्यवस्था करें।

**उद्यानप्रबन्धः**

❖ टमाटर एवं मिर्च की फसल मे जड़ एवं तना संधि सड़न रोग के नियंत्रण हेतु ट्राईकोडरमा 10 ग्राम/लीटर या कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ो की सिंचाई करें।
❖ मध्यम व ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रो में बन्दगोभी, गॉठगोभी, ब्रोकली पौध का रोपण करें।
❖ खीरा एवं चप्पन कद्दू के तैयार फलों को बाजार मे बिक्री करें।
❖ मिर्च की फसल में ऊपर से डन्ठल काले पड़कर सूखने की समस्या की निदान हेतु संक्रमित शाखाओं को तोड़कर हटा दें एवं फल सड़न की समस्या हेतु कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
❖ टमाटर की फसल मे पत्तियो पर धब्बे पड़ने एवं झुलसने पर मैनकोजेब 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
❖ शिमलामिर्च मे फल सड़ने की स्थिति मे मैनकोजेब 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
❖ फ्रासबीन की फलिया सड़ने एवं सफेद फफूंदी की बढ़वार दिखाई पड़ने पर कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
❖ पर्वतीय क्षेत्रों में असिंचित दशा में मूली, राई, धनियाँ, शलजम एवं पालक की बुवाई करें।
❖ पर्वतीय क्षेत्रो में टमाटर, बैंगन एवं शिमला मिर्च की फसल में बरसात के दौरान जल निकास की समुचित व्यवस्था रखें तथा समय–समय पर फलों की तुड़ाई करें।
❖ अत्यधिक वर्षा के कारण फल पौधों के थालों में एकत्रित पानी के निकास की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
❖ सदाबहार फल पौधों जैसे आम, अमरूद, नींबू, पपीता, लीची आदि फल पौधों को लगायें।
❖ बागीचों में खरपतवारों के नियंत्रण हेतु निराई–गुड़ाई करें।
❖ गुठलीदार फलों में गमोसिस रोग के नियंत्रण के लिए स्ट्रैप्टोसाईकलिन 0.01/या कापर आक्सीक्लोराइड 0.025 प्रतिशत का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।
❖ मध्यम ऊंचाई वाले पर्वतीय क्षेत्रों में सेब की देर से पकने वाली फल प्रजातियो के फलों को झड़ने से रोकने के लिए प्लेनोफिक्स नामक दवा का 10 पीपीएम छिड़काव करें।
❖ आम, अमरुद, नीबू, लीची आदि फलो के प्रवर्धन की प्रक्रिया शुरु करे।
❖ सेब फलो के तोड़ने की प्रक्रिया प्रारम्भ करे। गत्ते की पेटियो मे भरकर विपणन करे।
❖ सेब के थालो मे जल निकास की उचित व्यवस्था करे।
❖ आम की देर से पकने वाली प्रजातियो की तुड़ाई का कार्य प्रारम्भ करे।

**पशुपालनप्रबन्धः**

- पशु को ब्याने के बाद अच्छी तरह से साफ–सफाई करके यूटरोटाने/हरीरा/गाइनोटोन नामक दवा में से किसी एक दवा की 200 मिली मात्रा सुबह शाम तीन दिनों तक गर्भाशय की सफाई हेतु देनी चाहिए।
- पशुओं को बारिश का पानी नहीं पिलाना चाहिए।
- पशुओ को संक्रामक रोग से बचाने हेतु टीकाकरण करवायें।
- जुलाई एवं अगस्त महीना गाय/भैंसों की ब्याने का समय होता है अतः प्रसव प्रकोष्ठ को साफ–सुथरा करके इस्तेमाल हेतु तैयार रखें।
- प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।
- मानसून के प्रारम्भ में अचानक तेज घूप व तेज वर्षा से पशुओं को बचायें क्योंकि इसकी वजह से त्वचा में जलन जैसा विकार उत्पन्न हो जाता है।
- इस ऋतुओं में कृमियों का प्रकोप बढ़ जाता है और इससे बचने के लिए कृमिनाशक का उपयोग निकटतम पशु चिकित्सक की सहायता से करें।
- ज्यादा हरे चारे से घोड़ों में केलिक होने का खतरा रहता है अतः इससे बचें।

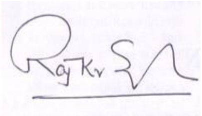

**डा0 आर0 के0 सिंह**
**प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी**
**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,**
**गो. ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर**